विद्यार्थियों को जिम्मेदार नागरिक बनाना ही मेरा मिशन : प्रो. रवीन्द्र गुप्ता

स्कूलों-कॉलेजों को शिक्षा का मंदिर कहा जाता है। उम्मीद की जाती है कि इन स्कूल-कॉलेजों से पढ़कर निकले विद्यार्थी देश और समाज के विकास में अपना सर्वोत्तम योगदान देंगे। लेकिन क्या अच्छे संस्कार, समाज के प्रति अपनी जिम्मेदारी और आत्मविश्वास के बिना यह संभव है। राजधानी में ऐसे कॉलेजों की संख्या नाममात्र ही है जो कॉलेज सिलेबस से अलग हटकर भी ऐसे कई प्रोग्राम चला रहे हैं जो उनके विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास का माध्यम बन रहे हैं। ऐसा ही एक कॉलेज है दक्षिण दिल्ली का पीजी डीएवी कॉलेज (सांध्य)। **वीर अर्जुन संवाददाता प्रभाकर शर्मा** ने इसे मुद्दे पर **पीजी डीएवी कॉलेज (सांध्य) के प्रिंसीपल प्रो. रवीन्द्र गुप्ता** से बातचीत करके यह जानने का प्रयास किया कि उन्हें इन योजनाओं का विचार कब और कैसे आया। इस सवाल के जवाब में प्रो. गुप्ता ने कहा कि मैं इस अकादमिक क्षेत्र में पिछले साढ़े तीन दशक से भी ज्यादा समय से कार्यरत हूं। मैंने हमेशा अपने दायित्व को मिशन और पैशन के साथ निभाने का प्रयास किया है। वर्ष 2014 में जब प्रिंसीपल पद की जिम्मेदारी मुझे मिली तो महसूस हुआ कि मुझ पर एक बड़ी जिम्मेदारी आई है। ईश्वर ने मुझे एक माध्यम बनाया है ताकि मैं विद्यार्थियों की बेहतरी के लिए लीक से हटकर कुछ अच्छे काम कर सकूं। विद्यार्थियों को जिम्मेदार नागरिक बनाना ही मेरा मिशन है। मैं इसे टीचर्स, विद्यार्थी और स्टाफ के प्रति एक जिम्मेदारी के रूप में लेता हूं। मैं समझता हूं कि यह कॉलेज या कोई भी शैक्षणिक संस्था विद्यार्थियों के लिए ही चलाए जाते हैं। यदि उनमें किसी वर्ष दाखिले न हों तो उनकी क्या जरूरत रह जाएगी। इसलिए इसके सबसे बड़े स्टेक होल्डर छात्र हैं। उन्हीं के भविष्य को ध्यान में रखकर इसका संचालन होना चाहिए। इसीलिए मेरा कहना है कि कोई काम ऐसा न हो जिससे विद्यार्थियों का अहित हो। किसी भी शैक्षणिक संस्था का उद्देश्य विद्यार्थियों का सर्वांगीण विकास होना चाहिए। इसके कई आयाम हैं। अच्छे स्तर की पढ़ाई होना तो अनिवार्य है ही साथ-साथ विद्यार्थियों को लगना चाहिए कि उनके व्यक्तित्व का भी विकास हुआ है। लेकिन पढ़ाई-लिखाई ही व्यक्तित्व विकास का एकमात्र रास्ता नहीं है। यदि ऐसा होता तो कई पढ़े-लिखे लोग आतंकी न होते। मैं समझता हूं कि जीवन में आगे बढ़ने के लिए मानवीय मूल्य और अच्छे संस्कार भी बहुत जरूरी है। सामाजिक भाव या सामाजिक दायित्व को भी इसमें एक बड़ी भूमिका है। हमारा कॉलेज इसे निभाने का भरपूर प्रयास करता है। उदाहरण के लिए पास में ही एक वृद्धाश्रम है। विद्यार्थी वहां जाते हैं। उनसे मिलते-जुलते हैं, बातचीत करके उनकी परेशानियों और जरूरतों को समझने का प्रयास करते हैं। इसके द्वारा हम विद्यार्थियों में सेवाभाव की भावना उत्पन्न करने का प्रयास करते हैं। आजकल जो मां-बाप को शिकायत रहती है कि बच्चे उनका कहना नहीं मानते, यह समस्या भी इस प्रोजेक्ट के द्वारा काफी हद तक दूर हो रही है। प्रो. गुप्ता ने एक अन्य योजना की जानकारी देते हुए बताया कि हमने कॉलेज में एक बहुत बड़ा बॉक्स बनाया हुआ है जिसमें विद्यार्थी और कॉलेज का स्टाफ ऐसे कपड़े डाल सकते हैं जिनका वह इस्तेमाल न कर रहे हों। यह कपड़े जरूरतमंदों के काम आते हैं। उन्होंने गरीब बच्चों को पढ़ाने के एक

प्रो. रवीन्द्र गुप्ता

प्रोजेक्ट के बारे में जानकारी देते हुए कहा कि कॉलेज के पास के एक स्लम एरिया में रहने वाले बच्चों को हम हर रविवार को बुलाकर न सिर्फ फ्री पढ़ाते हैं बल्कि रिफ्रेशमेंट और स्टेशनरी भी उपलब्ध कराते हैं। ऐसा करके बच्चों का जो टैलेंट है वह सबके सामने आता है जो हमें काफी संतुष्टि देता है। हम अपने कॉलेज के विद्यार्थियों की पढ़ाई का भी भरपूर ध्यान रखते हैं इसीलिए जो कॉलेज लाइब्रेरी आमतौर पर सांध्य कॉलेज के नाते डेढ़ बजे खुलती है उसे सुबह नौ-साढ़े नौ बजे खोल देते हैं ताकि विद्यार्थी अपनी परीक्षाओं की तैयारी बेहतर ढंग से कर पाएं। वहां पढ़ने आए जरूरतमंद विद्यार्थियों को खाने-पीने की चीजें भी फ्री मुहैया कराई जाती हैं। विद्यार्थी ज्यादा से ज्यादा सामाजिक बनें इसके लिए हम उन्हें जन्मदिन जैसे आयोजनों पर वंचित वर्गों की मदद करने के लिए प्रेरित करते हैं। प्रो. गुप्ता ने विद्यार्थियों में शिक्षा और सामाजिकता के साथ-साथ आध्यात्मिकता के महत्व पर भी बल देते हुए कहा कि निस्वार्थ भाव से काम करने के लिए विद्यार्थियों में आध्यात्मिकता का पुट होना जरूरी है। यदि विद्यार्थियों में आध्यात्मिकता का भाव जगाया जाएगा तो वह हर जिम्मेदारी को ईश्वर का काम समझ कर करेंगे। किसी का शोषण या अनादर नहीं करेंगे। अत्याचार से दूर रहेंगे। इसका भाव उनके अंदर आए इसके लिए हमने कुछ संस्थाओं जैसे इस्कॉन, ब्रह्मकुमारी के साथ एमओयू किया है। हम उन्हें योग ध्यान आदि कराते हैं, श्रीमद्भगवत गीता की जानकारी भी देते हैं। विद्यार्थियों के स्वास्थ्य के प्रति भी हम पूरा ध्यान रखते हैं क्योंकि मेरा मानना है कि एक स्वस्थ विद्यार्थी ही अपने कार्यों का पूर्ण रूप से निर्वहन कर सकता है। खेलों के जरिये हम उसे बढ़ावा देने का प्रयास करते हैं। विद्यार्थियों में राष्ट्रीयता की भावना होनी भी बहुत जरूरी है। यदि कोई छात्र अपने तक ही सीमित है और अपने काम को करते समय देशहित का विचार नहीं करता तो यह ठीक नहीं है। इसके लिए अनेक सेमिनारों का आयोजन करते रहते हैं। अभी जैसे कारगिल दिवस आ गया है। इस अवसर पर सेना से जुड़े रहे अनेक अधिकारियों व विद्यार्थियों के साथ अपने अनुभव साझा किया। चूंकि सभी बच्चों को एनसीसी में एडमिशन नहीं मिलता ऐसे में हमने उनके लिए एक संकल्प योजना शुरू की है जिसमें सभी कुछ एनसीसी जैसा ही होता है। मिलिट्री या पैरा मिलिट्री फोर्स के प्रति आभार जताने के लिए हम अपने कॉलेज में पढ़ रहे उनके बच्चों की फीस माफ करके उन्हें सेल्यूट करते हैं। पर्यावरण के प्रति जागरुकता को भी हम बहुत महत्व देते हैं। हमारा कॉलेज एकमात्र ऐसा कॉलेज है जहां एयर क्वालिटी मानिटरिंग स्टेशन स्थापित है। इसके माध्यम से हमें एयर क्वालिटी का डाटा मिलता है। वेस्ट मैटीरियल से खाद बनाने के अलावा हम प्लास्टिक वेस्ट, ई-वेस्ट, पेपर वेस्ट के निपटान के भी प्रोजेक्ट चला रहे हैं। इसके अलावा छात्राओं में आत्मविश्वास बढ़ाने के लिए उन्हें फ्री स्कूटी चलाना, सेल्फ डिफेंस की ट्रेनिंग देना भी हमारी प्राथमिकता में शामिल है। हमारा कॉलेज सेनेटरी वैंडिंग मशीन स्थापित करने वाला पहला कॉलेज है। विद्यार्थियों को लीगल जानकारी देने के लिए अवेयरनेस कोर्स चलाए जाते हैं और फ्री लीगल काउंसिलिंग दी जाती है। कोरोना महामारी के दौरान हमने जरूरतमंदों को राशन का इंतजाम किया। इस दौरान जो बच्चे अनाथ हो गए उन बच्चों को लैपटॉप, स्टेशनरी, किताबें, बस पास आदि मुहैया कराए। भारत को जी-20 की अध्यक्षता मिली है। इस अवसर पर मात्र 20 कॉलेजों का चयन किया गया है जिन्हें जी-20 से संबंधित कार्यक्रमों का नोडल सेंटर बनाया गया है। इसमें हमारा पीजी डीएवी कॉलेज सांध्य भी शामिल है। हमें जर्मनी अलॉट हुआ है। यह कार्यक्रम संभवत: सितम्बर में आयोजित होगा। प्रो. गुप्ता के अनुसार इन महत्वपूर्ण प्रोजेक्टों के अतिरिक्त भारतीय ज्ञान परंपरा को बढ़ाने के लिए अरुंधति भारतीय ज्ञान परंपरा केंद्र चल रहा है। इसके अलावा विद्या विस्तार योजना, एसएवीआई स्टडी सेंटर, हर्बल गार्डन के प्रोजेक्ट भी चल रहे हैं। अनसंग हीरोज के प्रोजेक्ट में ऐसे महापुरुषों के जीवन वृत को तैयार कर कॉलेज की वेबसाइट पर डाला जाता है जिनके बारे में या तो कम जानकारी होती है या बिल्कुल नहीं होती। इसके अलावा कई अन्य ऐसे प्रोजेक्ट हैं जिनके द्वारा विद्यार्थियों को भविष्य के लिए तैयार करने का प्रयास किया जा रहा है।